प्रकारान्तर से है।

प्रश्न 3. काव्य हेतु क्या है? विभिन्न विचारकों के मतों का उल्लेख करते हुए अपने विचार लिखें।

उत्तर—कवि में काव्य-निर्माण की सामर्थ्य उत्पन्न करने वाले साधनों का नाम काव्य हेतु है। भारतीय काव्य-शास्त्र में उन पर विस्तार से विचार हुआ है। वैसे काव्य के प्रेरक, हेतु और प्रयोजन शब्द लगभग समान हैं। पाश्चात्य काव्य-शास्त्र में प्रेरक तत्वों पर विचार हुआ है जबकि भारतीय काव्य-शास्त्र में काव्य के हेतु तथा प्रयोजन पर।

".....काव्य का वह गूढ़तम कारण जिसका अनुमान साधारणतया नहीं हो पाता 'प्रेरक' (अथवा प्रेरणा) कहलाता है, उसका अर्द्ध व्यक्त रूप 'हेतु' है और अपेक्षाकृत स्पष्टरूप 'प्रयोजन' है। काव्य का 'प्रेरक' वह कारण है जो मनोविश्लेषण से ज्ञात होता है, काव्य का साधन 'हेतु' है और काव्य का निमित्त अथवा उद्देश्य प्रयोजन।"

संस्कृत काव्य-शास्त्र के प्राचीन के प्राचीन आचार्यों में 'भामह' ने काव्य का हेतु केवल 'प्रतिभा' को माना है—

'गुरुपदेशादध्येतु शास्त्रं जड़ाध्योऽप्लम्।
काव्यं तु जायते जातु कस्यचित् प्रतिभावतः॥'

मम्मट के अनुसार, शक्ति, व्युत्पत्ति और अभ्यास पृथक् पृथक् काव्य के हेतु नहीं है अपितु तीनों मिलकर ही काव्य के हेतु हैं। रुद्रट ने भी तीनों को समन्वित रूप में ही स्वीकार किया है। त्रितयमिदं व्याप्रियते शक्तिर्व्युत्पत्तिरभ्यासः। वाग्भट्ट ने इन तीनों के सम्बन्धों को स्पष्ट करते हुए लिखा है—प्रतिभा काव्य का कारण है, व्युत्पत्ति विभूषण है और अभ्यास उसके सृजन को बढ़ाने वाला है, ऐसा प्राचीन कवियों का मत है—

प्रतिभा कारणं तस्य व्युत्पत्तिस्तु विभूषणम्।
भृशोत्पत्तिकृदभ्यास इत्यादिकवि संकथा॥ (वाग्भट्टालंकार 1/3)

आचार्य हेमचन्द्र के अनुसार, "प्रतिभा काव्य का हेतु है। व्युत्पत्ति और अभ्यास प्रतिभा का संस्कार करने वाले जिस प्रकार मृत्तिका और जल से संयुक्त ही बीज-माला की उत्पत्ति में कारण है उसी प्रकार शास्त्र और उसके अभ्यास से उत्पन्न प्रतिभा ही कवि की उत्पत्ति में कारण है"— जयदेव ने भी इसी बात का समर्थन किया है। पण्डितराज जगन्नाथ काव्य का कारण कवि में रहने वाली प्रतिभा को मानते हैं तथा व्युत्पत्ति और अभ्यास प्रतिभा के कारण है। उस प्रतिभा का हेतु किसी देवता, महापुरुष आदि की प्रसन्नता से उत्पन्न अदृष्ट होता है कहीं विलक्षण व्युत्पत्ति तथा काव्य रचना के अभ्यास से-तस्य च कारणं कविगत केवला प्रतिभा... तस्याश्च (प्रतिभायाश्च) हेतुः क्वचिद्देवता महापुरुष प्रसादादिजन्यमदृष्टम् क्वचिच्च विलक्षणव्युत्पत्तिकाव्य कारणाभ्यासौ।'

व्युत्पत्ति—व्युत्पत्ति का अर्थ है पाण्डित्य या विद्वता। रुद्रट के अनुसार छन्द व्याकरण, कला, लोकस्थिति एवं पदार्थ-ज्ञान से उत्पन्न उचितानुचित विवेक का नाम 'व्युत्पत्ति' है। मम्मट ने व्युत्पति को निपुणता कहा है। यह निपुणता चराचर जगत के निरीक्षण और काव्यादि के अध्ययन से प्राप्त होती है। इस प्रकार सांसारिक अनुभव और अध्ययन से निपुणता प्राप्त होती है। इसी का

Scanned with CamScanner

नाम व्युत्पत्ति है। शक्तिनिपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात् राजशेखर ने प्राचीन आचार्यों के आधा
पर व्युत्पत्ति को बहुज्ञात कहा है 'बहुज्ञता व्युत्पत्ति' यह बहुज्ञता निपुणता या व्युत्पत्ति कवि
काव्यकर्ता के लिए आवश्यक है क्योंकि इस ज्ञान और अध्ययन से उनके विचार प्रामाणिक बनें
हैं और वे पाठक को क्रान्तिकारी चेतना देने में समर्थ हो सकते हैं, क्रान्तिकारी चेतना वही
सकता है जिसे उचितानुचित का विवेक हो—'यह उचित-अनुचित का विवेक' राजशेखर के म
में व्युत्पत्ति है। "उचितनुचितविवेको व्युत्पत्तिः" इति यायावरीयः। मंगल व्युत्पत्ति को प्रतिभा
श्रेष्ठ मानते हैं, जबकि आनन्द प्रतिभा का श्रेष्ठ मानते हैं। किन्तु राजशेखर के मत में प्रतिभ
और व्युत्पत्ति समवेत रूप में श्रेयस्कर हैं। जैसे, लावण्य के बिना सुन्दर रूप फीका प्रतीत होत
है। रूप-सम्पत्ति के बिना लावण्य भी अधिक आकर्षक नहीं होता।

अभ्यास—प्रतिभा एवं व्युत्पत्ति से सम्पन्न कवि 'अभ्यास' द्वारा कविकर्म में कुशलता प्राप्
करता है—"अभ्यासो हि कर्मसु कौशलमावहति।" अभ्यास आदि-काव्य का प्रमुख तत्व नहीं
तो आवश्यक हेतु अवश्य है।अभ्यास का अर्थ है बार-बार प्रयोग अथवा निरन्तर प्रयत्न कर
रहना अभ्यास है।" दण्डी प्रतिभा के महत्व को सर्वोपरि महत्त्व देते हैं किन्तु वे अभ्यास को
भी आवश्यक मानते हुए कहते हैं कि "पूर्ववासनाजन्य अद्भूत प्रतिभा भले ही न हो, किन्
काव्य आदि के श्रवण अनुशीलता तथा निरन्तर अभ्यास से सरस्वती की उपासना करने पर वाणी
अवश्य ही अनुग्रह करती है। अतः जो कीर्ति चाहते हैं, उन्हें आलस्य का परित्याग कर सरस्वती
की उपासना करनी चाहिए, क्योंकि कवित्त्व के क्षीण होने पर भी अभ्यासशील व्यक्ति विद्वान
की सभा में बिहार करने में समर्थ हो सकते हैं" भामह, वामन, आनन्दवर्द्धन तथा अभिनवगुप्तादि
सभी आचार्यों ने 'अभ्यास' के महत्व को प्रयत्क्ष-अप्रत्यक्ष में स्वीकार किया है। वास्तव में 'अभ्यास'
कविकर्म के लिए आवश्यक तत्व है, उसके द्वारा काव्य में दीप्ति का आधान होता है। जड़बुद्धि
भी 'अभ्यास' के द्वारा सुजान हो सकते हैं।

समाधि—राजशेखर ने 'समाधि' को श्यामदेव के आधार पर काव्य का हेतु स्वीकार किय
है। वे मन की एकाग्रता को 'समाधि' कहते हैं। समाहितचित मूल अर्थ का दर्शन करता है। कवि
कर्म के लिए समाधि सर्वोत्कृष्ट साधन है, समाधि आन्तरिक है, अभ्यास बाह्य। वामन 'समाधि'
को 'अवधान' शब्द से अभिहित करते हैं। किन्तु यह 'समाधि' अभ्यास का ही प्रतिरूप है। समाधि
के लिए भी पहले अभ्यास की ही आवश्यकता है तथापि इसे काव्य का हेतु स्वीकार करने
में कोई दोष नहीं है।

उपर्युक्त विवेचन के अनन्तर हम इस निष्कर्ष पर सहज ही पहुँचते हैं कि भारतीय काव्यशास्त्र
के क्षेत्र में काव्य से हेतुओं पर पर्याप्त विचार हुआ है, वे हेतु प्रतिभा, व्युत्पत्ति, अभ्यास और
समाधि है। इन हेतुओं में से किसी ने एक को महत्व दिया है तो किसी ने दूसरों को, तथ
किसी ने तीनों का महत्व दिया है। किन्तु वास्तव में तीनों को समन्वित महत्व है, तीनों ही परस्प
पूरक हैं, अपने आप में कोई एक पर्याप्त नहीं है, एक के अभाव में दूसरा अपूर्ण ही है। प्रतिभाशाली
व्यक्ति को भी व्युत्पत्ति और अभ्यास का आश्रय लेना ही पड़ता है, अतः तीनों हेतुओं का महत्व
स्वीकार्य है। इसीलिए रुद्रट ने तीनों को महत्व देते हुए कहा है—"त्रितयमदं व्याप्रियत
शक्ति-व्युत्पतिरभ्यासः। आचार्य मम्मट ने भी तीनों के समन्वित महत्व को स्वीकार करते हुए
लिखा है—"त्रयः समुदितां न तु व्यस्तास्तस्य काव्यस्योदभवे निर्माणे सम्मुल्लासे च हेतुर्न तु हेतवः।'
ये तीनों ही काव्योत्कर्ष के समन्वित हेतु हैं, अलग-अलग नहीं। इसी प्रकार जयदेव तथा पण्डितराज
जगन्नाथ तीनों के महत्व को स्वीकार करते है। हिन्दी के अधिकांश आचार्य मम्मट और जयदेव
का अनुसरण करते हुए तीनों—प्रतिभा, व्युत्पत्ति और अभ्यास को काव्य का हेतु मानते हैं।

**प्रश्न 4. 'काव्य-दोष' के स्वरूप का विस्तृत वर्णन करते हुए उसे भेदों-उपभेदों प
प्रकाश डालिए।**

अथवा, 'काव्य-दोष' विषय पर एक संक्षिप्त तथा सारगर्भित निबन्ध लिखिए।

उत्तर—दोष का शाब्दिक अर्थ है—भूल, त्रुटि, हानि, रोग। साहित्य दर्पण में विश्वनाथ कह
हैं कि यह वह पदार्थ है जो मुख्य अर्थ का अपकर्ष अर्थात् रस की हानि करता है। यह तीन
प्रकार की होती है—रस की प्रतीति में विलम्बन के द्वारा, रस की प्रतीति में अवरोध के द्वा
तथा रस की प्रतीति में विघात के द्वारा।

Scanned with CamScanner